Chap-8

अध्याय-8

मूल्यांकन एवं उपसंहार

अष्टम अध्याय

मूल्यांकन एवं उपसंहार

अब तक के समस्त अध्ययन के पश्चात् हम यह स्पष्ट कर पाये हैं कि हास्य और व्यंग्य साहित्य की ऐसी सशक्त विधा है जिसमें जनसाधारण से लेकर नगर के प्रबुद्ध वैसारिक, मानदण्डों को भी बड़े ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

कभी-कभी लोग हास्य और व्यंग्य को संयुक्त धरातल पर विचार करके उसे एक ही संयुक्त संज्ञा से जोड़कर सोचते हैं, जहाँ यह भी भ्रम पैदा हो जाता है कि इस रचना को विशुद्ध हास्य रचना कहें या व्यंग्य रचना।

हास्य और व्यंग्य का प्रारम्भ हिन्दी साहित्य के इतिहास में वीर गाथा काल से ही प्रारम्भ हो जाता है। जहाँ कहीं-कहीं आश्रयदाता की प्रशस्ति में कही गयी अतिश्योक्ति पूर्ण उक्तियों में व्यंग्य का समावेश होता रहा है। वहाँ हास्य केवल मनोरंजन विपरीत और विरुक्त कथ्यों के साथ अभिव्यक्ति की विद्रूपता के साथ प्रकट होता है।

जबकि व्यंग्य प्रहसन के साथ-साथ आलोच्य वस्तु का मूल्यांकन करते हुए उसकी आन्तरिक वस्तु का मूल्यांकन करते हुए उसकी आन्तरिक कमजोरियों और विसंगतियों पर कटाक्ष भी करता था। हिन्दी की मध्यकालीन वीरगाथा कृतियों में यह भाव बड़े समर्थ रूप से व्यक्त हुआ है। कालान्तर में महाकवि भूषण ने भी अपनी

अतिश्योक्तिपूर्ण काव्य रचनाओं में इस प्रकार के प्रयोग किये हैं जैसे -

तीन बेर भोग करे तीन बेर भोग करे।

तीन बेर खाती सुबह, तीन बेर खाती है॥

भूषण शिथिल अंग, भूषण, शिथिल अंग नगन जड़ाती ते बा, जगत जड़ाती है। इस तरह -

तारा सो तरन धूरि धारा में लगत।

जिन धारा पर पारा, पारा बार यो हलत॥

भूषण के अलावा अन्य अनेक मध्यकालीन कवियों ने भी हास्य से अलग व्यंग्यों को एक नई पहचान दी है। तुलसीदास जी ने भी कहा था।

सुनिये विटप प्रभु, पुहुप तिहारे हम

राखिये हमें तो शोभा रावरी बढ़ाये है

देश में रहेंगे पर देश में रहेंगे, काहु

भेष में रहेंगे पर रावरे कहाये हैं।

इस तरह मध्यकाल के अन्य कवियों ने भी उक्ति वैचित्र्य के माध्यम से बहुत ही सुन्दर व्यंग्य की रचनाएं की हैं। अपने आश्रयदाता की अवहेलना पाकर कवि कहता है -

कन्तक गुलाबन की कौन परवाह हमें

हम अलि ब्रन्दन को बाग बहुतेरे हैं।

इस तरह की उक्तियाँ अनेक महाकवियों ने व्यक्त की हैं। विशुद्ध हास्य के रूप में कवि शंकर की ये पंक्ति देखिए जिसमें कवि अपने आश्रयदाता से चश्मा बनाने के लिए मदद मांगता है। वह कहता है कि मेरी पत्नी जो मेरा मुँह देखती रहती है उसके माथे पर पूजा की भस्म लगाने के लिए मुझे दिखाई नहीं देता है।

इसलिए ऐ धनादीश सेठ आप मुझे चश्मा दिलवा दीजिए।

खश्मा भुखी के मुख, भस्मा लगावन कौ

धनाधीन हमको दिवाओ एक चश्मा।

व्यंग्य की रचना बहुत प्रखर रूप में बिहारी के दोहों में पायी जाती है जहाँ वह राजा राजसिंह को सचेष्ट करता हुआ कहता है -

नहीं पराग नहीं मधुर मधु

नहीं विकास इहिं काल

अलि कली ही सो बिछियों

आगे कौन हवाल।

इस तरह बिहारी ने आश्रयदाता के अतिशय विलासपूर्ण जीवन पर तीखा व्यंग्य किया है।

इस शोध प्रबंध में हमने हास्य की विविध श्रेषिणों को स्पष्ट करते हुए उसके सामाजिक और वैयक्तिक प्रभावों में तथा उसके महत्व को ज्ञापित किया है। हास्य के शास्त्रीय रूप का निरूपण करते हुए हमने आचार्यो के इस विषयक सिद्धान्तों को रेखांकित किया है। काव्यांग विवेचना के अन्तर्गत नव रसों के मध्य में हास्य की सत्ता को ज्ञापित करते हुए उसके विविध लच्छी आयामों को शोदारण स्पष्ट किया है। हास्य की समष्टिगत चेतना पर तथा उसकी प्रवाहक सत्ता पर भी प्रकाश डाला गया है। जहाँ तक व्यंग्य का प्रश्न है सामाजिक परिवेश में उसकी सार्थक भूमिका बहुत विस्तृत है। कहीं-कहीं तो यह व्यंग्य हास्य के अन्तर्गत ही समाविष्ट होता है। कहीं-कहीं ये हास्य के साथ-साथ अपने लक्ष्य को रेखांकित करता है तो कहीं-कहीं हास्य से बिल्कुल इतर हटकर अपनी स्वतन्त्र सत्ता का आभास कराता है।

शास्त्रीय मान्यताओं के अनुसार उपहास, प्रहसन, कटाक्ष, आलोचना आदि अनेक रूप इस व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त होते हैं। इस शोध प्रबंध में आधुनिक काव्य के अनेक उदाहरण, देकर यह स्पष्ट किया गया है कि व्यंग्य के प्रहार समाज के लिए एवं मानव के लिए बहुत आवश्यक और उपेक्षित है। इस प्रबंध में यह स्पष्ट किया गया है कि व्यंग्यकार समाज का ऐसा कर्णधार है जो पर्दे के पीछे रहकर समाज को सुधारने का अवसर प्रदान करता है। जो लोग परिवार को, समाज को, राष्ट्र को, धर्म को तथा संस्कृति को तोड़ना चाहते हैं या उन्हें कमजोर करना चाहते हैं उनके रास्ते में यही व्यंग्य बहुत बड़ा अवरोध पैदा करता है। इसी व्यंग्य के माध्यम से समाज के गलित नेतृत्व को संभाला जाता है तथा विघटन के प्रवाह को रोका जाता है।

आधुनिक युग के अनेक सशक्त हास्यकार एवं व्यंग्यकारों ने बदलते मूल्यों के तहत जिन विविध धारणाओं को संपृष्ट किया है इस प्रबंध में उन सारे रूपों को स्पष्ट किया गया है।

आधुनिक काल में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हास्य एवं व्यंग्यकारों ने विदेशी सत्ता के प्रति अपने व्यंग्यगात्मक आक्रोश और हास्यास्पद स्थितियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। इन सबमें समर्थ कवि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र थे। जिन्होंने

हास्य व्यंग्य की समन्वित एवं सन्तुलित विधा पर रची गयी है। नीति नाटिका अंधेर नगरी में अपने सुस्पष्ट विचारों को व्यक्त किया है।

अंग्रेजी सत्ता के प्रति कटाक्ष करते हुए वे कहते हैं कि

अंधेर नगरी वे बूक्ष राजा,

टका शेर भाजी, टका शेर खाजा।

अंधार नगरी एक प्रहसन पूर्ण व्यंग्य नाटिका है। इसमें भारतेन्दु बाबू ने आंग्ल सत्ता के अन्याय और अनीतिपूर्ण आचरण को उजागर किया है।

आधुनिक काल में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी खड़ी बोली को स्थापित करके हास्य रूप से प्रदान किये। सन् 1947 तक राष्ट्रीय जागरण काल में हास्य-व्यंग्यकारों ने बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हुए हास्य-व्यंग्य की रचनाएं की हैं जिनमें काका रमई, बेढव बनारसी, हास्यवतार जगन्नाथ चतुर्वेदी, बरसाने लाल चतुर्वेदी आदि का समावेश है।

आजादी के बाद की परिस्थितियों को तथा लोकतंत्र की भ्रष्ट रूप रेखा को उजागर करनेवाले कवियों में गोपाल प्रसाद व्यास, ओमप्रकाश आदित्य, काका हाथरसी, निर्भय हाथरसी, बेढव बनारसी, शैल चतुर्वेदी आदि का नाम उल्लेखनीय है।

साठोत्तर आधुनिक हास्य-व्यंग्य कवियों में माणिक वर्मा, प्रदीप चौबे, ज्ञान चतुर्वेदी, विश्वेशवर शर्मा, गुरु सक्सेना, सुरेश उपाध्याय आदि का नाम उल्लेखनीय है।

व्यंग्य लेखकों में शरद जोशी और हरिशंकर परसाई का नाम बहुत ही प्रतिष्ठा के साथ सम्मानित है। जिन्होंने हिन्दी साहित्य को व्यवस्थित और सन्तुलित4 विधा प्रदान की है। इनके अलावा राजाराही, माशुषरजा, रेणु, भवक्त शर्मा, के.पी. सक्सेना आदि अनेक सभ्रन्त और प्रतिष्ठित लेखक हुए हैं। जिन्होंने हास्य-व्यंग्य की विधा आगे बढ़ाया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में अनेक अध्यायों में विभाजित करके हिन्दी साहित्य के आदि हास्य-व्यंग्य स्वरूप को विस्तार के साथ व्याख्यायित भी किया है और समालोचित भी किया है। इस शोध प्रबंध के द्वारा हास्य-व्यंग्य साहित्य की पृथक-पृथक भूमिकाओं को स्पष्ट करते हुए उनकी महत्ता को ज्ञापित करते हुए तथा उनके ज्ञान को प्रथम बार विश्लेषित किया गया। हास्य और व्यंग्य साहित्य पर इस तरह की शोध दृष्टि को स्पष्ट करने वाला यह प्रथम प्रयास है जिसमें हास्य-व्यंग्य के विविध आयामों पर विस्तार से चर्चा की गयी है।

आज समाज के सभी क्षेत्रों में अनेक विसंगतियों एवं विद्रुपताओं का समावेश हो गया है। इन बदलती हुई विपरीत परिस्थितियों पर आज के हास्य-व्यंग्यकारों ने काव्य के द्वारा उइजागर किया तथा इन समास्याओं को दूर करने का प्रयास किया है।

कवि हुल्लड़ मुरादाबादी ने समाज के न्याय विभाग पर बढ़ने वाले भ्रष्टाचार पर बढ़ते हुए रिश्वत के रूप पर कटाक्ष किया है -

रिश्वत देकर बच गया, जिसने करके खून।
अब उसको देगा सदा, कुदरत का कानून॥

अशोक अंजुम ने रिश्वत रूपी भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है -

डोल रही है भारत-नइया
निद्रा में है मग्न खिवइया।
रूदन उठा है गली-गली में,
संसद में न है ता....ता.... थइया।

*** * * ***

हम भी वोट छीन सकते हैं
टिकट दिलाना हमको भइया
जिनकी जेब भरी है, उनके
काम बनाए रिश्वत भइया।

काका हाथरसी ने भी समाज के अनेक विसंगतियों पर आर्थिक विषमताओं पर कटाक्ष किया है -

दिन-दिन बढ़ती है उधर, जातिवाद की छूट,
इधर गरीबी ला रहा, महँगाई का भूत।
महँगाई का भूत, लूट होती है दिन में,
रेल और बस लूटे, व्याप्त है भय जन-गण में।
भ्रष्ट मुनाभाखोर, अर्थ पर डाले डाका,
देख रहे हैं टुकुर-टुकुर सत्ता के काका।

आज के महंगाई के विकराल रूप को देखकर कवि बालकृष्ण 'गर्ग' ने व्यंग्य किया है -

घोर महँगाई के पर्वत तले
सर छुपाए जा रहे हैं, क्या करें?

है निरा पतझड़, बहारों के मगर,
गति गाए जा रहे हैं, क्या करें?

कवि गोपाल प्रसाद व्यास ने आज की महँगाई के बढ़ने से फैलती बुराइयों को देखकर मिलावट पर व्यंग्य किया है -

हफ्तों तक उनकी जीजी से,
बातों में मेल नहीं होगा।
चेहरे पर चमक नहीं होगी,
बालों में तेल नहीं होगा।
दालों में कंकर निकलेंगे,
सब्जी में होगा नमक तेज।
धरनी की कृपा, बिन घर में,
रहना कुछ खेल नहीं होगा।

आदित्य शर्मा चेतन ने आज की शिक्षा के बदलते मूल्यों पर व्यंग्य किया है। आज के शिक्षक अपने कर्तव्यों को भूल गये हैं -

एक बालक ने शिक्षक दिवस के दिन
शिक्षक दिवस नहीं मनाया।
मैंने उससे कारण पूछा -
उसने बतलाया -
हम शिक्षक दिवस कैसे मनाते।
हमारे गुरुजी तो -
कभी विद्यालय नहीं आते।
और आज।
जबकि सारा हिन्दुस्तान,
शिक्षक दिवस मना रहा है।
हमारा शिक्षक
शराब पीकर -
सड़क पर लड़खड़ा रहा है।

मधुप पांडेय ने समाज के सांस्कृतिक मूल्यों के परिवर्तन पर व्यंग्य किया है।

हमें हर्ष है -

कि हमारे मूल्यों में
बेहद उत्कर्ष है
देखिए न
डाक्टर की नजर में
मरीज नहीं
मरीज का पर्स है
और मरीज की नजर में
डाक्टर नहीं, डाक्टर के साथ वाली,
खूबसूरत नर्स है।

कवि अरुण जैमिनी ने समाज के सभी क्षेत्रों में मूल्यों के पतन पर व्यंग्य किया है -

अध्यापक जो सचमुच पढ़ाये
अफर जो रिश्वत न खाए
बुद्धिजीवी जो राह दिखाए
कानून जो न्याय दिलवाय
ऐसा बाप जो समझाए
और ऐसा बेटा जो समझ जाए
ढूँढ़ते रह जाओगे।

काका हाथरसी ने आज की पुलिस व्यवस्था के गिरते मूल्य पतन पर व्यंग्य किया है -

पुलिसमैन जी रेल-मेल में अच्छी ड्यूटू दे रहे,
डाकू स्लीपर लूट रहे हैं, वे खर्राटे ले रहे।

समाज की अनेक विपरीत परिस्थितियों को आधुनिक युग के कवियों ने व्यंग्य द्वारा उजागर किया है।

*

संदर्भग्रन्थ-सूचि

1. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य का मूल्यांकन, डॉ. सुरेश महेश्वरी। (प्रथम 1994)
2. हिन्दी साहित्य में हास्य रस, बरसाने लाल चतुर्वेदी। (चतुर्थ 1985)
3. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। (प्रथम 2001)
4. हिन्दी की मंचीय कविता, डॉ. रामनरेश (प्रथम 1991)
5. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य, शेरजंग गर्ग।
6. आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यंग्य, डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी।
7. हिन्दी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य, डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी
8. हिन्दी और गुजराती कहानियों में हास्य और व्यंग्य का तुलनात्मक अनुशीलन, डॉ. भगवानदास कहार।
9. गुडमैन, व्यूसेंस ऑफ लिटररी ऐसेज
10. व्यंग्य क्या व्यंग्य क्यों, डॉ. श्याम सुन्दर घोष
11. परसाई रचनावली चूहा और मैं, डॉ. हरिशंकर परसाई
12. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गद्य में व्यंग्य, डॉ. हरिशंकर परसाई
13. मेरी श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी
14. आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यंग्य, डॉ. वीरेन्द्र मेहदीरत्तां।
15. हास्य के सिद्धान्त तथा मानस में हास्य, प्रो. जगदीश पाण्डे
16. द ओक्सफोर्ड इन्लिश डिक्शनरी, वाल्यूम - बी.पी. 660
17. शारदा तनय : भाव प्रकाश
18. An Essay on Commedy, Meridith P-84
19. व्यंग्य का सौन्दर्य शास्त्र मलय साहित्यवाणी इलाहाबाद
20. व्यंग्य विविधा में व्यंग्य, डॉ. कमलेश शर्मा राजस्थानी हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
21. एल.जे. पोट्स, कामदी
22. जोन.एस. बुलिट, जोनाथन स्विफट एण्ड दि एनाटोमी ऑफ सटायर लन्दन 1961
23. Meridth Idea of Comedy London, 1948
24. Encyclopedia Britannica
25. Webster's New International Dictionary.
26. हिन्दी व्यंग्य साहित्य में नारी, डॉ. शैलजी महेश्वरी 1997 विकास प्रकाशन कानपुर
27. हिन्दी नाटकों में व्यंग्य तत्व डॉ. शातांरानी 1969 इलाहाबाद
28. हिन्दी साहित्य में विविधवाद डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल, दिल्ली 1955
29. विभत्स रस और हिन्दी साहित्य डॉ. कृष्णदेव झारी 1996 दिल्ली
30. हिन्दी साहित्य कोश भाग-3 रामखेलावन पाण्डे।
31. विश्वनाथ डॉ. सत्यव्रत सिंह
32. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा डॉ. मिथिलेश महेश्वरी प्रथम 1990 हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर
33. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबन्ध साहित्य में व्यंग्य डॉ. ऊषा शर्मा 1985 आत्माराम एण्ड संस कश्मीरीगेट दिल्ली।
34. हिन्दी गुजराती व्यंग्य व्यंग्य साहित्य एवम् अन्य शोध समीक्षात्मक निबंध डॉ. भगवानदास कहार प्रथम 2004, कटारा प्रकाशन, वडोदरा।
35. मन की लहर प्रतापनारायण मिश्र
36. मुकरियाँ भारतेन्दु ग्रंथावली
37. भारतेन्दुकालीन व्यंग्य परम्परा ब्रजेन्द्रनाथ पाण्डेय

38. हिन्दी की मंचीय कविता डॉ. रामेनरेशँ प्रथम 1991 विकास प्रकाशन कानपुर
39. प्रतापनारायण मिश्र की हिन्दी गद्य को देन डॉ. शान्ति प्रसाद वर्मा।
40. आधुनिक ब्रजभाषा काव्य, डॉ. जगदीश बाजपेई।
41. वीणा नवम्बर 1937 पृ. 25
42. देहाती अभिनन्दन स्मारिका, पृ. 17
43. साठोत्तरी हिन्दी काव्य में राजनैतिक चेतना डॉ. एस. गम्भीर संस्करण 1992, विद्याविहार, गांधीनगर, कानपुर.
44. साठोत्तरी हिन्दी गज़ल डॉ. मधु खराटे
45. हिन्दी कविता में गजलः संवेदना और शिल्प डॉ. जे. पी. गंगवार.

काव्य संग्रह :

1. अब तो आसू पोछ- अल्हड़ बीकानेरी
2. हास्य-विनोद काव्य कोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास, (प्रथम 2001) भारतीय प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली।
3. अच्छा है पर कभी-कभी हुल्लड़ मुरादाबादी 1998, पुस्तकायन 2/3 बी, अंसारी रोड नई दिल्ली।
4. व्यंग्यमेव जयते-योगेन्द्र मौद्गिल (प्रथम 2002) ग्रंथ अकादमी 1949 पुराना दीयागंज नई दिल्ली।
5. दमदार और दुमदार दोहे हुल्लड़ मुरादाबीद
6. लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य कविताएं अशोक अंजुम (2001) जीवन प्रभात प्रकाशन मुम्बई
7. हम क्या समझते नहीं है- अशाकरण अटल (प्रथम 2000) हिन्दी पांकेट बुक्स ज़ी.टी. रोड. दिल्ली
8. श्रेष्ठ्य हास्य-व्यंग्य कविताएँ, काकाहाथ रसी गिरिराज शरण
9. खुल्लम खुल्ला-अशोक अंजुम (संस्करण नवम्बर 1994) साधना पाकेट बुक्स, दिल्ली।
10. 1988 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
11. 1989 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
12. 1990 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
13. 1991 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
14. 1992 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
15. 1993 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
16. 1994 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
17. 1995 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
18. 1996 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
19. 1997 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
20. 1998 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
21. 1999 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
22. 2002 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
23. 2003 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ-डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
24. अशोक चक्रधर के चुटपुटकुले (1995) हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर
25. हास्य कवि दरबार-प्रेम किशोक पटाखा
26. सांड का ब्याह-कालीचरण गौतम (प्रथम 1991) ज्ञानोदय प्रकाशन शाहदरा दिल्ली
27. मजा मिलेनियम पं. सुरेश नीरव
28. हँसता खिलखिलाता हास्य-कवि सम्मेलन प्रेम किशोर बटाखा साधना पाकेट बुक्स मेरठ (2002)
29. हास्य-व्यंग्य के विविधरंग-बरसाने लाल चतुर्वेदी (1994) हिमाचल पुस्तक भण्डार गांधीनगर, दिल्ली

30. काका की फुलझड़ियाँ- काकी हाथरसी 2002, डायमंड पाकेट बुक्स, दिल्ली.
31. जय बोलो बेईमान की काका हाथरसी(2002) डायमंड पाकेट् बुक्स, दिल्ली.
32. काका की महफिल काका हाथरसी (2002) डायमंड पाकेट् बुक्स, दिल्ली.
33. काका की चौपाल -काका हाथरसी (2001) डायमंड पाकेट् बुक्स, दिल्ली.
34. काका तरंग - काका हाथरसी (2002) डायमंड पाकेट् बुक्स, दिल्ली.
35. लूटनीति मंथन करी क काका हाथरसी (प्रथम 2000) डायमंड पाकेट् बुक्स, दिल्ली.
36. हास्य के गुब्बारे काका हाथरसी (1988) डायमंड पाकेट् बुक्स, दिल्ली.
37. काका-काकी की नोक-झोक, काका हाथरसी
38. काका के कारतूस- काका हाथरसी
39. यारखपतक काका हाथरसी, डायमंड पाकेट् बुक्स, दिल्ली. (2001)
40. चुनी चुनाई अशोक चक्रधर (प्रथम 2002) प्रतिभा प्रतिष्ठान नई, दिल्ली.
41. पेंट में दाढ़ियाँ है सूर्य कुमार पाण्डेय (प्रतम 1999) गीति का प्रकाशन 16 साहित्य विहार बिजनौर उ.प्र.
42. तमाशा अशोक चक्रधर (1995) हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर
43. हास्य और व्यंग्य मधुप पांडेय के संग (1994) हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर।
44. नेता चरित्रम्-रामप्रसाद मिश्र (1994) तथागत प्रिंटिग प्रेस 48, न्यू कालका गढी, गाजियाबाद.
45. समय की रेलपेल महेश चन्द्र सौख्य घर (साँख्यघर मिश्र मंडल आर.पी. डिग्री कालेज, बरेली)
46. धूर्त दर्पण-धूर्त बनारसी (2002)
47. साले की कृपा, डॉ. किशोर काबरा (1975) अभिनव भारती, अहमदाबाद
48. टूटा हुआ शहर, डॉ. किशोर काबरा (1983) अकिराम प्रकाशन कृष्ण नगर, दिल्ली।
49. चेतन-चुटकी-आदिच्य शर्मा चेतन (2002) साहित्य प्रकाशन छतरपुर।
50. हँसी आती है शैल चतुर्वेदी (2004) साहित्य संग्राम लूकरगंज इलाहाबाद
51. राग-खटराग डॉ. सुरेन्द्र वर्मा (प्रथम 1997) लूकरगंज इलाहाबाद.
52. हँसो बत्तीसी फाडके (एक हास्य कवि सम्मेलन) प्रेम किशोर पटाखा, रवि पाँकेट बुक्स 33 हरी नगर मेरठ (2000)
53. हास्य सागर गोपाल प्रसाद व्यास (1996) पुस्तकायन 2/4240 अंसारी रोड नई दिल्ली।
54. टुकड़े-टुकड़े सोच जय कुमार रुसवा (प्रथम 1999 सितम्बर) छपतें-छपते प्रकाशन कलकत्ता।
55. लाशें खिलखिलाती है धूमकेतु।
56. दादा की रेल यात्रा डॉ. श्रीराम ठाकुर दादा, (प्रथम 1996) निर्देशिका प्रकाशन
57. मुर्दो का प्रति भोज काशीपुरी कुंदन (प्रथम 1987) साहित्य महानदी राजिम
58. सोची-समझी अशोक चक्रधर (प्रथम 2002 प्रतिभा प्रतिष्ठान नई दिल्ली।)
59. गिद्ध भोज- रामकशिोर मेंहता (प्रथम 1990) अनुजा प्रकाशन (कहानी)
60. समय का शंख नरेन्द्र मिश्र धड़कन। (2001) कश्ती प्रकाशन जयगंज अलीगढ़।
61. हंसी के रंग कवियों के संग-पत्र किशोर पटाखा, राजा पाकेट, बुक्स बुराड़ी दिल्ली।
62. हास्य-व्यंग्य में डूबे 136 अजूबें अशोक अंजूम-साधना पॉकेट बुक्स बैग्लो रोड, दिल्ली.
63. सो तो. है-अशोक चक्रधर हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर।
64. व्यंग्य के पुरोधा डॉ. परमेश्वर गोयल (2003) मित्तल एण्डसंस, लक्ष्मीनगर दिल्ली।
65. भोल-भाले अशोक चक्रधर (1991) हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर
66. उलटा टंगा हुआ प्रजातंत्र रामचन्द्र सरोज (प्रथम 1989) राका प्रकाशन इलाहाबाद।
67. हास्य भी व्यंग्य भी अशोक अंजुम (प्रथम 1995) संवेदना प्रकाशन, अलीगढ़.
68. सूख गये सबताल -डॉ. गोपाल बाबू शर्मा (प्रथम-2004) अरविन्द प्रकाशन अलीगढ़.
69. घाट-घाट घूमें अल्हड बीकानेरी (1996) साहित्य वीथी शहदरा, दिल्ली।
70. भैसा पीवे सोमरस अल्हड़ बीकानेरी (प्रथंम 1998) साहित्य वीथी शाध्यरा दिल्ली।
71. दूधों नहाओ पूतों फलो डॉ. गोपाल बाबू शर्मा (प्रथम 1998) संवेदना प्रकाशन, अलीगढ।

पत्रिका ::

1. रंग चकतलस
2. अट्टहास
3. हास्य-व्यंग्य भारती
4. नई गुदगुदी
5. कलामे हकीम
6. व्यंग्य-तरंग
7. हुड़दंग
8. कलम दंश
9. जर्जर कश्ती
10. महाभोज